Tirohit upanyas mein nihith Jeevan moolya

D.Amsaveni
Head & Associate Professor, Dept. of Hindi, Sri Ramakrishna College of Arts and Science for women, New Siddhapudur, Coimbatore-641044

सार—**गीतांजलि श्री के उपन्यास तिरोहित में जीवन.मूल्यों का चित्रण मानवीय संवेदनाए संघर्ष और आत्मान्वेषण के आयामों के माध्यम से उभरता है। उपन्यास का नायक चच्चो सामाजिक.सांस्कृतिक जटिलताओं के बीच अपने अस्तित्वए पहचान और नैतिक बोध को समझने का प्रयास करता है। कथा में सत्यए आत्मसम्मानए सहानुभूतिए श्रम.शीलताए मानवीय रिश्तों की गरिमा तथा सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों को प्रमुखता दी गई है। त्रोहित का संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहींए बल्कि समूचे समाज में व्याप्त असमानताओं व मानवीय विघटन के विरुद्ध एक प्रतीकात्मक प्रतिरोध है। उपन्यास तिरोहित दिखाता है कि आधुनिक जीवन की विडंबनाओं के बीच भी मनुष्य अपने भीतर के मूल्य.आधारित आधार को खोजकर अर्थपूर्ण और संवेदनशील जीवन की स्थापना कर सकता है। इस प्रकार मानव.मनए समाज और जीवन.मूल्यों के अंतर्संबंधों की गहन पड़ताल करने वाला एक महत्वपूर्ण साहित्यिक पाठ बन जाता है।**

कुंजी शब्द—**मानवीय संवेदनाए संघर्षए सामाजिक.सांस्कृतिक जटिलताएँए नैतिक बोधए श्रमशीलताए मूल्य.आधारित जीवनए सत्य और आत्मसम्मान**

गीतांजलि श्री के उपन्यास तिरोहित का संक्षिप्त परिचय

गीतांजलि श्री का 'तिरोहित' उपन्यास सन् 2001 में प्रकाशित हुआ। घर की दीवारों की भले ही जुबान नहीं होती, मगर उनके काम ज़रूर होते है। अगर वह बोल सकती तो वह मोहल्ले में हो रहे बातों की कहानियाँ सुनाने सुनाती।

कहानियाँ सुनाने को इंसान रह गए थे जो बोलते तो बहुत थे मगर सुनते कम थे। वे सुनने से भी कम देखते थे। वे जो भी कहानियाँ बोलने सच्ची या झूठी। उनको उसी तरह आगे बढ़ते देते थे। वे कहानियाँ वैसी की वैसी पूरे घर में सुनाई जाने लगती।

उसी घर की छत पर मोहल्ले के बच्चें खेल रहे थे। उन्हीं बच्चों के साथ मैं भी खेलने लगता। जब बड़े बच्चे मेरा निकर नीचे खींचते और बोलने को धमकाते कि देखा मैंने दम दम देखा तो मैं अपना निकर कसकर पकड़ना और उनकी बात मानकर ज़ोर से बोलता। सभी हँस देते और उनके साथ मैं भी हंस देता था। वह वापिस गुही फेंककर एक पैर पर कदमें और खेलने लगता। लेकिन बड़े लोग, झाँकने के बाद वापिस खेल नहीं खेलते।

रोशनदान का वह पुराना शीश कई कहानियाँ बताता था, वहाँ से कहानियाँ मोहल्ले में फैल जाती हो, दूसरे लोग फिर कहते कि देख लिया न खुद की आँखों से अब; बच्चों भी यही बोलते है और वे कभी झूठ नहीं बोल सकते। मगर जब दूसरे लोगों ने रोशनदान से नीचे झांका तो यह नहीं गौर किया कि चाचा और ललना बड़े कमरे में सोते है और चाच्ची बेचारी अकेली पास के कमरे में सोती है।

जिस कमरे में चच्चो सीती भी वो पौर के पास या और रोशनदान से दिखता नहीं था। घर में एक पुस्तकालय था और एक कमरा जिसमें रद्दी का सामान रखा जाता था। उस कमरे में बहुत सारी चीज़ें रखी गई थी। बच्चों का मन होता कि वे उस कमरे में छिप जाएँ मगर वह वहाँ पकडे जाते तो ललना और माँ-बाप से खूब डाँट खाते। मैं उदास हानि लगा पुस्तकालय की याद करके।

मेरी एक प्रेमिका ने वर्षों बाद पूछा था कि वह पुस्तकालय का क्या हुआ और मैंने जवाब दिया कि वह अब नहीं रहा, वह गायब हो गया। मैं चुप हो गया। वहाँ की किताबें धीरे-धीरे

रद्दीवाले को बेच दी गई थी, मेरी प्रेमिका कुछ समय बाद बोली कि वह पुस्तकालय नहीं था, बल्कि बच्चों का कमरा था जहाँ वह अकेली सोती थी। ललना और चाचा साथ में दूसरे कमरे में सोते थे। मैं उसकी बातें सुनकर शांत हो गया। धीरे से मैंने जवाब में 'अच्छा' बोला।

फिर प्रेमिका मुझे झिडकाये हुए कहती है कि बच्चों ने भी रोशनदान से देखा था कि कौन किसके साथ सोता है। चाचा और मैं एक कमरे में सोते थे और चच्चो और ललना का नाम ललना नहीं था और कोई भी उसकी असली नाम नहीं जानता था।

जब मैंने ललना से इस बात का जिक्र किया एक बार तो वह पूरी तरह चैंक गई। वह उस वक्त चखा साफ कर रही थी और जिस स्कूल पर वह चढ़ी हुई थीं, उसे मैं और चच्चों कसकर पकडे थे। वे इतनी ज़ोर से हिली कि माके अभी गिरेगी और साथ में मुझे और चच्चो को भी गिरा देगी।

चच्चो हड़बड़ाकर पूछती है मुझसे कि कौन वह रहा था ऐसा कि मेरा नाम ललना नहीं है -फिर चच्चो की तरफ देखकर कहती है कि बहन जी इसे उन बच्चों के साथ मत खेलने दो वरना यह भी इनके जैसा बिगड जायेगा। इतना कहकर उसने हाथ में जो डंडा था उसे ज़मीन पर ज़ोर से पटक दिया।

सभी लोग ललना का असली नाम नहीं जानते थे। वह बस यही जानते थे कि वह एक दिन रोते-रोते प्रेमचन्द जी के घर आई थी। तब मोहल्ला उसे ललना की बहू के नाम से जानने लगा था, पर वह लल्लन की पत्नी भी ही नहीं, उसे बस ऐसे ही कहा जाता था।

मेरी वही प्रेमिका सालों के बाद छत की टंकी के पीछे जाकर पूछने लगी कि ऐसा कैसे हो सकता है कि एक पूरा इंसान गायब हो जाए?

मैंने उससे कहा कि एक बार मुझे चच्चो ने बताया था (उसे ललना से पता चला) कि लल्लन पागल था, वह मर गया, गायब हो गया। लल्लन के पिता ललना को धन्धे में बिठाना चाहते थे, इसलिए वो कहाँ से भाग गई।

प्रेमिका ने मुझसे पूछा कि भागकर वह कहाँ गई। मैंने उसे बताया कि मैंने सुना है कि उसके ससुर यहाँ लाये थे। ललना दिन-भर रोती रहती थी और अपने ससुर से कहती थी कि मुझे छोडकर मत जाना वरना मैं नहीं जी पाऊँगी और ससुर के पैरों के सामने बैठे-बैठे रोती रहती थी।

ससुर उससे दूर हटते थे। फिर प्रेमिका बोलती है कि क्या पता वो ससुर नहीं थे, बल्कि लल्लन ही था जो उससे पुकारा जाना चाहता था और अपनी किसी दूसरी दुलहन के पास जाना चाहता था।

फिर मैंने संकोच करते हुए सोचा कि ऐसा भी हो सकता है और हामी भरी। फिर प्रेमिका ने बोला कि ऐसा भी हो सकता है, ललना, लल्लन की दूसरी दुल्हन के पास जाना चाहता था। फिर मैंने संकोच करते हुए सोचा कि ऐसा भी हो सकता है और हामी भरी। फिर प्रेमिका ने बोला कि ऐसा भी तो हो सकता है ललना लल्लन की दडूसरी बीवी से तंग आकर भाग आई हो? मैंने अपनी प्रेमिका को बस कहा, क्योंकि कोई नहीं जानता था कि ललना कौन थी और कहाँ से आई थी।

सार यह था कि आई थी वह कहीं से और उसे हमारे द्वार छोड़ने एक लल्लन नाम का व्यक्ति भी आया था।वह रोती रही कि उसे यहाँ अकेले न छोड़कर जाएँ मग रवह चला गया, लल्लन था, नहीं था, कौन था, कहाँ से था, कोई भी नहीं जानता। सभी लोग यही सोचने कि ललना भागकर आई है। चाचा उसे लल्लन की कहते थे चच्चो उसे ललना कहती थी। मैं रंजिशा में रहता था कि जब हमारे घर में चच्चो पहले से ही है तो यह ललना वहाँ बीच में आ गई। उसकी याद घर में हर जगह थी।

मुझे याद है कि मैंने दरवाजा खोला था और सामने उसे खड़ा पाया। वह धीरे से मेरे घर में आई और सारा काम-धाम खुद संभालने लगी। वह अक्सर चच्चों की कुर्सी लेकर उस जगह बैठती जहाँ चच्चो बैठ करती थी,मैं दूर से खड़ा होकर सब देखता रहता था।रात के डेढ़ बज रहे थे। मैंने चच्चो और ललना को खड़ा देख कहा कि इतनी रात तो रही है।तुम्हें सो जाना चाहिए चच्चो।

चच्चो ने मेरी ओर देखकर कहा कि हाँ सो जाऊँगी मगर उसके कहने के तरीके से लगा जैसे वह हमेशा के लिए सोने वाली है और ललना फूटकर रोने लगी। मैं बत्ती बुझाकर चला गया और ललना भी चली गई। चच्चो की मृत्यु हो गई थी।बाद में ललना मुझ से कहती है कि अगर वह वहाँ होती तो ऐसा न होने देती। बाद मैं वह अक्सर चच्चो की खिड़की पर उसकी याद में खड़े रहते थे।

मैंने सिगरेट जलाई जिसमें से ललना ने भी कुछ करा लिये। तो उस दिन देर रात तक चच्चो के कमरे में घूमती रही थी, जब मैंने बोला कि देर रात हो गई है तुम कुछ खा लो तो उसने हाँ कहा कि हाँ खा लूँगी। मुझे नहीं पता था कि यह मेरी और उसकी आखिरी बातचीत होगी।

उसने मुझसे चच्चो की अलमारी की चाबी माँगी और उसका सारा सामान बाहर निकाल, पोंछकर-साफ करके, नई तरह से ज़माया, पोंछकर-साफ करके, नई तरह से जमाया, वह चच्चो की याद को संवार रही थी या अपना भविष्य? बाद में एक दिन जब मैं आॅफिस से आया और उसने दरवाजा खोला तो मुझे फर्क महसूस होने लगा।कुछ समय पहले, हम इसी परिस्थिति में थे, फर्क बस यह था कि मैं तब अंदर था और अ बवह अंदर है।

मैं फटाकर अंदर आ जाता है और देशी थी, जीरे और हीग की खुशबू मुझे झकझोर कर रखा देती है। मैं सोचता हूँ कि पहले की तरह ललना मुझे फिर चच्चो से वंचित करना चाहती है। मैं ऊपर चढ़ जाता है, छत की ओर, सामने खड़ा सोचने लगता हूँ कि कई बार चच्चो भी यहाँ आई होगी और मेरी तरह दरवाजे के सामने खड़े होकर उसके मन में कैसे विचार घूमते होंगे? छत एक समुन्दर के समान मुझे विशाल लगने लगती थी। यह घर कितना बड़ा था? यहाँ की दीवारों ने क्या-क्या देखा और सुना होगा।

चाचा नहीं जान पाते कि कब वह चच्चो, जो एक डॉट में सिमट जाती थी, अचानक उठ जाती है और कही दूर उड़ जाती है। उसका मन अब यहाँ नहीं है। बरसात का मौसम है। वह धीरे-धीरे छत पर चलती है और मैं उसके पीछे-पीछे। हम चलने लगते है -'चच्चो की याद और मैं, वह टंकी के ऊपर चढ़ती है फिर छज्जे पर, वह अपनी साडी समेटती है और हवा चल रही होती है। हवा चच्चो की साड़ी को उड़ाती है और वह मुंडेरे पर पढ़ रस्सी पर चल धीरे-से नीचे कूद जाती है। एवह भी, मैं भी।

प्रस्तुत उपन्यास की समीक्षा करते हुए रोहिणी अग्रवाल ने लिखा है - ''श्री ने 'तिरोहित' में परिवार संस्था की संरचना में रत पुरुष दृष्टि एवं स्त्री दृष्टि के सामाजिक पक्ष को बेहद निर्वैयक्तिक ढंग से प्रस्तुत किया है। न वे सायास ढंग से स्त्री-शोषण के ज्वलंत मुद्दों को उठाती है, न आंदोलनधर्मी ढंग से स्त्री चेतना के बंद कपाटों को खोलने एक पराक्रम रचती हैं. घटना क्रम में बजाय चरित्र-चित्रण व पात्रों को जोड़नेवाली स्मृतियों को केन्द में रखकर वे व्यक्ति के अन्तर्मन की बारीकियों को इस कुशलता से उद्घाटित करती हैं।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि गीतांजलि श्री ने घरेलु जीवन को उभारा है। जिसमें दैनिक जीवन का चित्रण हुआ हैं। परंतु कथा के विसतार के अभाव में उपन्यास बोझिल सा बन गया है। जिसे पढ़ने-समझने के लिए विशेष प्रकार की मानसिकता अपेक्षित हैं।

तिरोहित उपन्यास में निहित जीवन मूल्य

गीतांजली श्री का लिखा तीसरा उपन्यास है तिरोहित। तिरोहित का अर्थ है अप्रकट याने अदृश्य। तिरोहित में सब कुछ ऐसे अप्रकट ढंग से होता है कि पाठक शंकित से रह जाते हैं। सब कुछ उपन्यास के फ्रेम के बाहर होता है। जिन्दगीयाँ चलती-बदलती है, नये-नये रागद्वेष उभरते हैं, प्रतिदिन प्रतिशोध होते हैं,प्रतिदान भी होते हैं पर चुपके-चुपके, व्यक्त से अधिक मुखर होता है अनकहा।

पैनी तराशी हुई शैली, विलक्षण निम्न सृष्टि, और दो चरित्रों ललना और चच्चो के परस्पर टकराते स्मृति प्रवाह के सहारे कथावस्तु उद्घाटित होती है।

एक रहस्यमयी छत में सारी घटनायें घटित होती हैं। इस रहस्यमयी छत से बनता है कथा का रूप जो हमें दिखाते हैं चच्चो/बहनजी, और ललना की इच्छाओं और उनके जीवन की परिस्थितियाँ के बीच न पट सकनेवाली दूरी। वैसी ही दूरी रहता है इन स्त्रियों के स्वयं भोगे यथार्थ और समाज द्वारा देखी गयी उनकी असलियत में।

एक तीसरा पात्र भी है ओमबाबू जिसे चाचा कहकर पुकारते है। लेखिका कहती है पुरुष की दृष्टि में स्त्री वही है जो पति की करनी पर चूँ तक नहीं करती। औरत वही जो आदमी के मन को समझे, उसे साफ कर दे।

सामाजिक मूल्य

लेबरनम हाउस की छत। अब भी कभी-कभी सराफों की छत कहलाती है। 18वीं शती में यह अराफों का मोहल्ला था। उनको राजा ने छत के नीचे रहने-बेचने की जगह दी। कहीं ऊँची कहीं नीची छत।

तिरोहित' उपन्यास में लेबरनम हाउस के वर्णन में सामाजिकता परिलक्षित होती है। स्त्री समाज में सामाजिक रूप में कार्य पूर्ण किया जाता है। चींटियों के काकिले बने औरतें, बच्चे नौकर नीचे बिलों से निकलकर छत पर जमा होता तो कभी थामना नहीं चाहते। फूल बडी, साबूदाने के पापड, और बडियाँ और-और पापडों पर सवार औरतों के गप्पें और चूडियाँ की खनखनाहट और खिसकते धुँधटे नौकरों को अलग पड़ी होती कि

आसमान में गीले कपडे ''टाँगकर बीडी, सुलगा लें, ज़रा गुट खा फाँक लें। हम बच्चों की कुलाँचे अलग, हम तरुणों की उच्छृंखलता अलग।

कालान्तर में लेबरमन हाउस यह बदलाव आया कि दिन में छा हुई है। अब लोगों ने बल्लियों से बँट शुरु कर दिया है। कुछ ने गमलों बना दी है। लेबरमन में कितना ही हो उनके मन में बँटवारा नहीं हुआ है।

लेबरमन हाउस में कुट्टियों की पंगत लग जाती है। किसी न किसी परिवार के लोग अन्य किसी न किसी परिवार के लोगों से बोलना बन्द कर देता। दो दिन, चार दिन, लम्बे अरसे तक मगर इन कुट्टियों में ऐसा कुछ नहीं या कि परिवार टूटे। परिवार नहीं रहते हैं।

समानता

' तिरोहित' उपन्यास में लेबरनम हाऊस के वर्णन में समाज के लोगों का पारम्पारिक सद्भाव परिलक्षित होता है। स्त्री समाज में सामुदायिक रूप से कार्य पूर्ण किए जाते हैं। इसमें सामाजिकता का निर्वाह अपने आप हो जाता है। लेखिका लिखती है "चीटियों के काफ़िले बने औरतें, बच्चे, नौकर, नींचे बिलों से निकलकर छत पर जमा होते तो कभी थमना नहीं चाहते। फूलबड़ी, साबूदाने के पापड़, और और बड़ियों, और और पापड़ों पर सवार औरतों की गप्पे और चूड़ियों की खनखनाहट और खिसकते घूँघट। नौकरों को अलग पड़ी होती कि आसमान में गीले कपड़े टांगकर बीड़ी सुलगा ले, ज़रा गुटखा फ़ॉक लें। हम बच्चों की कुलाँचे अलग, हम तरूणों की उच्छृंखलता अलग। " यह प्रसंग भारतीय समाज की विशेषता है। जिसमें सामाजिक उदान्त पक्ष का उद्घाटन होता है।

संवेदनशीलता

तिरोहित उपन्यास में परंतु कालान्तर में लेबरमन हाऊस में यह बदलाव आया कि "दिन में छत खासकर बदली हुई लगती है। अबे तो लोगों ने बल्लियों लगवाकर छत में बंटवारा शुरू कर दिया है। और कुछ नहीं तो गमलों से बाउंडरी बना दी है। अपने अलग घरों में बैठते लोग आराम के बजाए आक्रामक से बैठते हैं, जैसे चेहरों पर तख़्ती लटकी हो- 'नो ट्रेसपासिंग ' इसमें अनेकता में एकता का ही भाव है। लेबरमन हाऊस में कितना भी बंटवारा हो परन्तु उनके मनों में बँटवारा नहीं हुआ है। कभी-कभी आपस में मनमुटाव होता। कुट्टी हो जाती। लेखिका के अनुसार- "यों कुट्टी में कोई शर्म की बात नहीं होती। लेबरमन हाऊस के घर-घर में

कुट्टियों की पंगत लग जाती है ! कोई-न-कोई परिवार के सदस्य, किसी न किसी उसी परिवार के प्राणी से बोलना बन्द कर देता। दो दिन, चार दिन, तो आए दिन। अक्सर लम्बे अरसे के लिए भी. मगर इन कुट्टियों में ऐसा कुछ नहीं था कि परिवार टूटे। परिवार वही रहते, वहीं रहते। '' ये कुट्टियों बच्चों के समान होती। क्षण में दोस्ती, क्षण में कुटिट्, अगले क्षण फिर दोस्ती। ये मन के भोले-भाले थे।

तिरोहित' उपन्यास में मातृत्व के कारण रहस्य और शक्ति के सबंध में लिखा है किमी मी वह वह नहीं जिसकी कोख भ्रूण उगलाती है। माँ वह, जिसकी कोख पुकारती है। देख सकते हो तो देखो, मातृत्व एवं एक बहर है। जिसकी गति कोख के बाहर को बढ़ती नहीं है बाहर से कोख में आती है। यह सही है कि कोख के राज़ माँ समझ सकती है।'

धार्मिक मूल्य

तिरोहित' उपन्यास में लेबरनम हाउस को बिजली के बल्ब से सजाने की योजना बीती है। ललना को लोगों ने देखा कि वह हाथ पीछे बाँधे हुए इधर से उधर और उधर से इधर दीपावली की तैयारियों के बीच बनारसी जरी की तमनारी की साडी में घूमती फिरती ''इस तरह कि मुआइना करती हो कि कहाँ बिजली की बत्तियाँ कहाँ तेल के महकते दीये मानो उसके मन में आसीन होने लगी है। लम्बी-गणेषे जमा हो रहे हैं, खील बताशे की ढेरियाँ और जलने वाले हैं, अनार चर्खियों, फूल झाडियाँ।

पतिव्रता धर्म

तिरोहित उपन्यास में पतिव्रता धर्म और स्त्रियों की सहनशीलता पर भी प्रकाश डाला गया है। उपन्यास की चच्चो पतिव्रता नारी है; साथ-ही- साथ सहनशील भी है। जब उसकी मृत्यु हुई तो लोग कहते हैं - ''पिछले जन्म में इसके पति ने पुण्य किया होगा, जो ऐसी सहनशील पत्नी मिली। चच्चो बेचारी है जो पति की करनी पर चूँ तक नहीं बोलती और दूसरी के सूने पेट तक नहीं बोलती और दूसरी के सूने पेट पर रहन करके उसकी तीमारदारी में लग गयी। उसकी उदारता एवं सरल स्वभाव के कारण उसे इज्जत से पार गमी, हर खुशी, त्योहार में न्योता, दिया जाता था।

भारत में माना जाता है कि आदर्श पत्नी वही है जो पति के मन को समझें। चच्चो हमेशा अपने शील की चिन्ता करती है। उसके ललाट पर एक सामान्य चिन्ता करती है। उसके ललाट पर एक समान पल्लु का साया है उसके कंधों पर शाश्वत रिश्तों की

धूल है। लेखिका कहती है - ''औरतों को एक सूखी रोटी, एक चीथडा कपडा, एक अपने नाम का 'साया' पति तो देता है। ओमबाबू बीमार है, परन्तु लेबरनम हाउस वाले मानते हैं कि उनकी पत्नी के व्रत से यमराज हारेंगे और ओम बाबू स्वस्थ हो जायेंगे।

गीतांजली श्री ने चेतना संपन्न नारियों का चित्रण भी किया है। इन नारियों की मानसिकता यह होती है कि परंपरायें एक प्रकार की कैद है। उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं। लेबरमन हाउस की ललना और चच्चो के माध्यम से सरवी भाव प्रेम (लेस्बियन सम्बन्ध) का निरूपण किया है। ललना और चच्चो एक ही चादर में खींचातानी में कहीं ब्लाऊज़ चढा रही थी, कहीं धोती खोंस रही थी। चाँदनी रात में एकसाथ निरस्तन चमक उठे। उपन्यासकार ने ललना और चच्चो के माध्यम से सरवी भाव का निरूपण किया है।

सन्दर्भ सूची

[1] समीक्षा, संपादक गोपाल राय, जनवरी-मार्च 2023, पृ. 18-19

[2] प्रकाशकीय वक्तव्य

[3] तिरोहित, गीतांजली श्री, पृ. 19

[4] हिंदी के 'अधुनातन नारी उपन्यास चह175

[5] तिरोहित, गीतांजली श्री 38

[6] तिरोहित, गीतांजली श्री, पृ. 170

[7] हिन्दी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता, डा॔. बीना रानी यादव, पृ. 80